जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान टिहरी गढ़वाल, नई टिहरी

द्विवर्षीय डी॰एल॰एड॰ प्रशिक्षुओं की 'थिएटर इन एजुकेशन' कार्यशाला

कार्यक्रम आख्या

दिनांक 18 से 22 जुलाई, 2023

कार्यक्रम समन्वयक : श्रीमती सुषमा महर, प्रवक्ता, डायट, नई टिहरी

सह समन्वयक : डॉ॰ सुमन नेगी, प्रवक्ता, डायट, नई टिहरी

द्विवर्षीय डी॰एल॰एड॰ प्रशिक्षुओं की पांच दिवसीय

थिएटर इन एजुकेशन कार्यशाला आख्या

18 जून से 22 जून 2023दिनांक 18 जून, 2023 को डी॰एल॰एड॰ प्रशिक्षुओं की पांच दिवसीय थिएटर इन एजुकेशन कार्यशाला का शुभारम्भ निर्धारित समयानुसार श्री राजेन्द्र प्रसाद डंडरियाल, प्राचार्य डायट नई टिहरी, श्री गणेश बड़ोनी संदर्भदाता अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन, अभिषेक मिश्रा संदर्भदाता अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन, समन्वयक श्रीमती सुषमा महर, डॉ॰सुमन नेगी, प्रवक्ता सेवापूर्व विभाग, संस्थान के संकाय सदस्य एवं डी॰एल॰एड॰ प्रशिक्षुओं की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया। सर्वप्रथम प्राचार्य द्वारा उपस्थित संदर्भदाताओं एवं डी॰एल॰एड॰ प्रशिक्षुओं का कार्यशाला में स्वागत एवं अभिनन्दन किया गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अंतर्गत थिएटर इन एजुकेशन की आवश्यकता एवं महत्व के बारे में डी॰एल॰एड॰ प्रशिक्षुओं को अवगत करवाया गया एवं सैद्धान्तिक पक्ष के साथ–साथ व्यवहारिक पक्ष पर ध्यान देने के निर्देश भी दिये गये।

2. कार्यक्रम समन्वयक श्रीमती सुषमा महर, प्रवक्ता द्वारा डी॰एल॰एड॰ प्रशिक्षुओं को थिएटर इन एजुकेशन के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अध्याय–04 में यह स्पष्ट किया गया है कि विद्यालयों में पाठ्यक्रम और शिक्षण शास्त्र अधिगम समग्र, एकीकृत, आनन्ददायी और रूचिकर होना चाहिए। साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया है कि शिक्षण प्रक्रिया शिक्षार्थी केंद्रित हो, जिज्ञासा, खोज, अनुभव और संवाद के आधार पर संचालित हो। इसी उद्देश्य से द्विवर्षीय डी॰एल॰एड॰ प्रशिक्षण में सृजनात्मक नाटय कला कौशल के विकास हेतु पांच दिवसीय थिएटर इन एजुकेशन कार्यशाला का आयोजन किया गया। भाषायी विकास के लिए कार्यशाला के महत्व को चिह्नांकित करते हुए बताया गया कि नाट्य कला स्कूली बच्चों को अपने विचारों और भावनाओं को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम है। जिससे बच्चों में स्वतंत्र चिंतन, भाषायी एवं सृजनात्मकता का विकास होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में विद्यालयों में सीखने के लिए वातावरण निर्माण करना व सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने में एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को रूचिकर बनाने में थिएटर इन एजुकेशन मील का पत्थर साबित होगी।
3. कार्यशाला में मुख्य संदर्भदाता श्री गणेश बड़ोनी के द्वारा थिएटर इन एजुकेशन के बारे में सैद्धान्तिक पक्ष की जानकारी दी गयी। उन्होने कहा कि विद्यालयी शिक्षा में नाट्य कला के माध्यम से बच्चों की सृजनात्मकता का विकास एवं भाषा के अन्य उद्देश्यों की प्राप्ति करने में सहायक होता है। इस कार्यशाला में मुख्य संदर्भदाताओं के द्वारा थिएटर इन एजुकेशन का मुख्य उद्देश्य शिक्षा में अंग संचालन की कला को जानना व क्रियान्वयन करने की कला के बारे में बताया गया। इस कला को संदर्भदाताओं ने प्रशिक्षुओं से विभिन्न गतिविधियों जैसे–चलते–चलते रूकना, विभिन्न मुद्राएं बनाना इत्यादि को कराकर समझाया गया।

4.

5.

4. इस कार्यशाला में प्रशिक्षुओं को आंख मूंदकर कर विश्वास करना जैसी गतिविधि करवायी गयी, जिससे प्रशिक्षुओं में एक–दूसरे पर विश्वास की भावना का विकास हुआ। साथ ही Still Images (स्थिर चित्रण) के द्वारा कल्पना शक्ति का विकास जैसी गतिविधियों को सम्पन्न कराया गया। इन गतिविधियों में प्रारंभिक स्तर की पुस्तकों की विभिन्न कहानियों का चित्रण केवल तीन मुद्राओं से सिखाने की कला के बारे में बताया गया।

5. थिएटर इन एजुकेशन में संदर्भदाताओं द्वारा विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करने का उद्देश्य प्रशिक्षुओं में तार्किक व सृजन शक्ति का विकास करना है। जिससे सीमित संसाधनों में एक अच्छी कहानी से एक अच्छा नाटक सृजित करने की कला का विकास किया जाता है जिसका उपयोग वह भविष्य में शिक्षक के रूप में छात्र हित में कर पाने में सक्षम हो सके।

अंत में प्राचार्य के शुभाशीष वचनों के साथ सभी संदर्भदाताओं को धन्यवाद ज्ञापित कर कार्यशाला का समापन किया गया।

(राजेन्द्र प्रसाद डंडरियाल)
प्राचार्य
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
टिहरी गढ़वाल, नई टिहरी